भाषण–१

यह एक परिचायक भाषण है जो गुरु ने 'मनुष्य, ब्रह्माण्ड और ईश्वर के एकत्व का विज्ञान' पर २९ मई १९८५ को लेडीज़ और चिल्ड्रन'स क्लब', स्टोनीलैंड, लायमुखराह, शिलौंग में, उस समूह को सम्बोधित करते हुए दिया जिनमें गनमान्य व्यक्ति थे, जैसे— वैज्ञानिक, प्रशासनाधिकारी, शिक्षा विशारद, व्यवसाय करने वाले प्रसिद्ध लोग एवं लेडीज़। भक्तवृन्दों की भजन प्रस्तुति और स्थानीय कलाकारों द्वारा भक्ति संगीत पेश करने के पश्चात भाषण प्रारंभ हुआ।

इन बीस अंको द्वारा पूरे भाषण के विभिन्न विषय वस्तुओं के मूल को इंगित किया गया है।

१. ब्रह्माण्ड का आश्रय
२. पुरुष व प्रकृति या सत्ता व शक्ति
३. भौतिक विज्ञान व आध्यात्मिक विज्ञान
४. आत्मज्ञान का सत्य
५. सत्-चित्-आनंद— परम दिव्य तत्व।
६. व्यष्टि अनुभूति
७. 'विद्या'– ज्ञान का विज्ञान (प्रज्ञान की क्रिया)
८. पुरुष व प्रकृति का सत्य
९. धर्म
१०. प्राकृतिक विज्ञान व आध्यत्मिक विज्ञान की विशेषता
११. एकत्व का विज्ञान
१२. प्राकृतिक विज्ञान का योगदान
१३. एकत्व के विज्ञान का योगदान

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

१४. आत्मज्ञानी व स्वानुभूति
१५. यथार्थ स्वरूप— दिव्य स्वरूप
१६. व्यक्तिनिष्ठ व वस्तुनिष्ठ अनुभूतियों का संतुलन व एकता
१७. विभिन्न ऊर्जा स्तरों का सत्य
१८. साक्षी चैतन्य की स्वानुभूति
१९. द्वि-स्तरीय विद्या का तुलनात्मक अध्ययन— परा व अपरा
२०. आध्यात्मिक पूर्णता के लिए यथार्थ गुरु की आवश्यकता

गुरु का प्रवचन पूरा तात्कालिक था और उन्होंने उसे आरंभ किया एक अपरंपरागत ढंग से, अपनी मौलिकता और शिक्षा की यथार्थता के अनुसार।

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

❄

मेरे और सबके प्रियतम, निकटतम और परम प्रेमास्पद असीम आत्मन्— क्रीड़ा-हेतु, अथाह आनंद और प्रेमवश, स्वयं-हेतु और खेल के उत्साह को चालित रखने के लिए मनोरम मनमोहक मुखौटों को ग्रहण कर, असंख्य रूपों को धारण कर, अपने ही अंदर निरंतर स्वयं प्रकाश हो चला है। वह मेरे समक्ष सदा उपस्थित है, हम सब के सामने भी हमेशा विराजमान है। विशुद्ध चैतन्य के असीम ऊर्जा का वह स्रोत है– सभी अभिव्यक्तियों का आधार है–- सूक्ष्मतम, सूक्ष्म और स्थूल। यह पूरा विषय है– 'Sportful Dramatic Sameside Game of Infinite Self-Consciousness' (अखंड निज चैतन्य का नाटकीय एकतरफ़ा क्रीड़ाभिनय)।

ब्रह्माण्ड का आश्रय

यह समस्त ब्रह्माण्ड और कुछ नहीं बल्कि बाहरी अभिव्यक्ति है उस क्रीड़ा की, यह असीम दिव्य नाटक है जहाँ हर व्यक्ति एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है— दर्शक और अभिनेता दोनों स्वयं ही बनकर। प्रत्येक मनुष्य को शुद्ध चैतन्य की शक्ति के चारों आयामों से गुज़रना पड़ेगा जो दिव्य तत्व है और जिसे 'चित्-शक्ति' (चैतन्य शक्ति), 'परा-प्रकृति' (परम प्रकृति), 'आद्या-शक्ति' (मौलिक शक्ति और देवी-भगवती माता) कहा गया है।

पुरुष व प्रकृति या सत्ता व शक्ति

आत्म-चैतन्य की असीम क्रीड़ा का द्विस्तरीय स्वभाव है पुरुष व प्रकृति। उनका जड़ और चेतन स्वभाव एक ही सिद्धांत है चैतन्य शक्ति का; और यही सब मनुष्यों को सँवारती है, जीवन में उनके लक्ष्य, उद्देश्य, कर्मों और परिणामों को निर्देशित करती है। इस क्रीड़ा में सत्य या तत्व के विभिन्न आयामों की अभिव्यक्तियाँ होती हैं दो विविधकृत गतियों द्वारा। वह है अपकेंद्री और अभिकेंद्री। अपकेंद्री है, पूर्ववर्ती वह

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

गति जो केंद्र से बाहर की ओर होती है अर्थात् एकत्व से नानात्व-बहुत्व की ओर जाना; और परवर्ती है वह गति जो बाहर से भीतर और केंन्द्र की ओर जाती है, अर्थात् नानात्व-बहुत्व से एकत्व की ओर जाना।

भौतिक विज्ञान व आध्यात्मिक विज्ञान

भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान का मूल एक ही है, और वह है मनुष्यों को सत्य/सच्चाई प्रकट करना। साधारणतः वैज्ञानिकों को इस बात का अभी ज्ञान नहीं है। हमारे देश में इस सत्य का आविष्कार प्राचीन काल के ऋषियों ने काफ़ी अनुसंधान, एकाग्रचित जाँच-पड़ताल और गहरे सोच-विचार के पश्चात् इस जीवन और ब्रह्माण्ड के यथार्थ स्वरूप का पता लगाया था। इस जीवन और प्रकांड ब्रह्माण्ड की असीम शक्ति के स्रोत के तत्व और सत्य को जानने के लिए उनको विश्लेषणात्मक प्रक्रिया और सु-अनुशासित शुद्ध मन/चित्त की एकाग्रता— इन दोनों चीज़ो का पालन करना पड़ा था। विश्लेषणात्मक प्रक्रिया द्वारा वह जीवन और ब्रह्माण्ड के बाहरी स्वभाव के शक्ति स्रोत तक पहुँच पाये थे और सु-अनुशासित शुद्ध मन/चित्त की एकाग्रता और ध्यान के द्वारा वह आत्मज्ञान तक पहुँच पाये। यही आत्मज्ञान है साक्षी-चैतन्य, दिव्य तत्व।

आत्मज्ञान के प्रकाश से उन्हें उस 'एकत्व का ज्ञान' हुआ जो सर्वव्यापी है। आत्मज्ञान है सबका यथार्थ स्वरूप। वह है स्वतःसिद्ध, स्वयं-प्रकाश, स्वयं-व्यक्त तत्व, चिर शुद्ध। वह भीतरी स्वभाव की विषयवस्तु के द्वैत भाव से और बाहरी स्वभाव के नाम और रूप की असमानताओं से चिर-मुक्त है। यह समस्त ब्रह्माण्ड, सभी जीवों, सभी अनुभूतियों और सभी अभिव्यक्तियों का आधार है।

आत्मज्ञान का सत्य

आत्मज्ञान के प्रकाश से हमें यह अनुभव होता है कि बाहरी स्वभाव की सभी असमानताएँ और भीतरी स्वभाव का द्वैत भाव व सापेक्षिकता और कुछ नहीं, बल्कि उसी एक तत्व की अभिव्यक्ति है, जो सभी के पीछे विराजमान है उनकी पृष्ठभूमि और आधार के रूप में। यह मूल/

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

आधार है— नित्य, एक, असीम, शुद्ध चैतन्य, आनंद, प्रेम और शान्ति–– सत्-चित्-आनंद भूमा की प्रतिमूर्ति जिसे ब्रह्मन्, आत्मन् या ईश्वर कहा जाता है।

सत्-चित्-आनंद– परम दिव्य तत्व

'सत्-चित्-आनंद' शब्द को अच्छी तरह समझना आवश्यक है क्योंकि यह परम दिव्य आत्मन् का तीन स्तरीय नाम है; यह वही एक (भूमा) है जो वेदों का सार-तत्व है। इस शब्द की महत्वता इस शब्द में ही स्थित है क्योंकि यह परम उद्देश्यों, भव्य गुणों, नियमों, शुद्धता, सुंदरता, समानता, समचित्तता, शांति, प्रशांति, ज्योतिर्मयता, एकता, सारूप्य असीमता, नित्यता का केंद्रित मूल है। यह स्वभावतः समरूपी है। यह एक दिव्य मूल के तीन शब्दों से बना है। 'सत्' का अर्थ है सत्य, श्रेष्ठता और केवल अस्तित्व— अखंड भूमा। 'चित्' का अर्थ है ज्योतिर्मयता, स्वयं-दीप्त, सभी प्रकाशों का प्रकाश, सभी ज्ञानों का ज्ञान, सभी बोधों का बोध–– जो है चैतन्य सिद्धांत। 'आनंद' है 'सत्' और 'चित्' की पूर्णता। ये दोनों शब्द दिव्य अस्तित्व को भूमा रूप में सूचित करते हैं। 'सत्' है स्थूल, कारण और अतिकारण का मूल। किसी भी वस्तु के प्रकाशन के लिए अस्तित्व की चार अवस्थाओं का होना आवश्यक है, जो हैं–– रूप, नाम, भाव और बोध। इन चारों के भी एक ही नाम पद्धति वाले चार उपवर्गीय आनुक्रमिक अवस्थाएँ हैं। अतिकारण है तुरीय। 'सत्' प्रज्वलित होता है अपनी अंतर्निहित शक्ति 'चित्' से, जो उसका यथार्थ स्वरूप है, अंतर्निहित तत्व, आधारभूत मूल, जीवन व्यापी सत्य है। 'चित्' असीम है और न इसका कोई आरंभ है न अंत है, अतः वह अपरिमित आनंद और सर्वव्यापी है। 'आनंद' है अपरिमेय, असीम और पूर्ण।

हमारी अनुभूति की समस्त रचना वस्तुतः 'सत्-चित्-आनंद', दिव्य तत्व, हमारा यथार्थ स्वरूप है। हमारे अस्तित्व का और ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का मूल एक ही है। ब्रह्माण्ड का तत्व दिव्य आत्मन् में है, उसके आविर्भाव में नहीं। देखने में वह आपेक्षिक, असमान है, अतः आभासी है। देखने

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

में नामों और रूपों में असमानता है, परन्तु मूल में नहीं; वह केवल अज्ञानता के कारण भ्रांतिमय मन का अध्यारोपण है या इसे क्रीड़ा की स्फूर्ति के अनुशासन के लिए गुणों की अभिव्यक्ति मान लिया जाता है।

व्यष्टि अनुभूति

मनुष्य इच्छानुसार या अनिच्छानुसार आपेक्षिक अस्तित्व का आनंद ले सकता है, अनुभव कर सकता है; या तो वह अपने आप को वहाँ से हटाकर वस्तुनिष्ठ जगत के प्रति अनासक्ति और वियुक्ति उत्पन्न करके अपने यथार्थ स्वरूप में प्रतिष्ठित हो सकता है। हमें बाहर की सभी विविधताओं को त्यागना है और अंदर के सभी द्वैत भाव और आपेक्षिकता का वर्जन करना है। हम भीतरी आध्यात्मिक विभेदीकरण, आत्म-विश्लेषण, आत्म-जिज्ञासा, आत्म-समर्पण की सहायता से अपने यथार्थ स्वरूप की प्रत्यक्ष अनुभूति पा सकते हैं।

आपेक्षिकता, नामों और रूपों की विविधता, कार्य और परिणाम, इन सभी को लोग आसानी से समझ सकते हैं; परन्तु सभी की एकता का ज्ञान, सबका आधाररूपी एकत्व का ज्ञान, इसे उचित प्रशिक्षण के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का सिद्धांत— ये तृस्तरीय अवस्थाएँ जीवन में कार्यात्मक हैं। वे मूलतः एक हैं, इसे हम आत्मज्ञान के पश्चात जान पाते हैं।

विद्या– ज्ञान का विज्ञान (प्रज्ञान की क्रिया)

'विज्ञान' शब्द का अर्थ है 'विद्या' (तकनीक या प्रक्रिया)। आध्यात्मिक भाव से है भीतरी ज्ञान। भीतरी स्वभाव के रूप में वह अनुभूति का सिद्धांत है जो स्वयं को प्रकाशित करता है विभिन्न रूपों में जिससे कि वह दिव्य जीवन की भीतरी महिमा को प्रकट कर सके। जीवन है असीम आत्म-चैतन्य (दिव्य चैतन्य) की अभिव्यक्ति या प्रकाश। उसमें 'पुरुष व प्रकृति' के रूप में सभी नित्य दिव्य मूल समाविष्ट हैं।

पुरुष व प्रकृति का सत्य

पुरुष व प्रकृति का स्वभाव जीवन की भीतरी दिव्यता को प्रकाशित करता है। पुरुष है अंतरात्मा। वह सिद्धांत है ज्ञान का, अनुभूति का,

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

प्रज्ञान का, आनंद का, प्रेम और शांति का— सब की 'एक में प्रतिष्ठा' का। वह सभी सिद्धांतों की एकता और सारूप्य है। प्रकृति है पुरुष की महिमा का प्रकाशन और यह द्विस्तरीय है। एक है केन्द्र से बाहर की ओर और दूसरा है बाहर से केन्द्र की ओर। पूर्ववर्ती है एकत्व से नानात्व-बहुत्व तक; परवर्ती है नानात्व-बहुत्व से एकत्व तक; जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

जीवन के स्वभाव का विश्लेषण निम्नलिखित ढंग से किया गया है। बाहरी स्वभाव को भीतरी/अंदरूनी स्वभाव नियंत्रित करता है, संपोषित करता है और अनुरक्षण करता है; भीतरी स्वभाव को केन्द्रीय स्वभाव और केन्द्रीय स्वभाव को नियंत्रित और चालित करता है भावातीत बोध। शक्ति स्रोत के विभिन्न स्तर हैं उसी एक असीम आत्मन् या दिव्य चैतन्य की अभिव्यक्तियाँ।

धर्म

आध्यात्मिक विज्ञान के अनुसार धर्म है धारण करने वाला सिद्धांत। वह मनुष्य और पूरे जगत के भीतरी व बाहरी स्वभाव के ज्ञान और शक्ति के संतुलन एवं पूर्ण विकास की असीम प्रक्रिया और तकनीक है। वह समस्त अभिव्यक्तियों के पूर्ण मूल को धारण किये हुए है। वस्तुतः वह जीवन के मुक्त स्वभाव का एकक सिद्धांत है, जिसका कार्य है जीवन के अंदरूनी दिव्य सद्गुणों का नित्य प्रकाशन।

प्राकृतिक विज्ञान व आध्यात्मिक विज्ञान की विशेषता

एक वैज्ञानिक का कार्य और एक आध्यात्मवादी का कार्य स्वभाव से भिन्न प्रतीत हो सकता है, परन्तु वास्तव में वह एक दूसरे के संपूरक और परिपूरक होते हैं। आधुनिक काल के वैज्ञानिक प्राकृतिक विज्ञानों पर काम कर रहे हैं, वह समष्टि कारणता के भाव से ग्रस्त हैं। उनका कर्म अधिकतर बाहरी स्वभाव के कार्य व कारण से होता है। इसलिए उनका ज्ञान मात्र भौतिक, वस्तुनिष्ठ, आपेक्षिक, लौकिक, अनुभूतिमूलक और बौद्धिक होता है। दूसरी ओर इन सब के पीछे जो तत्व है, वह है 'ज्ञान का विज्ञान'। जो आध्यात्मवादी और सच्चे धार्मिकगण होते हैं

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

वह आध्यात्मिक विज्ञान, जो है 'एकत्व का विज्ञान', उसी को लेकर काम करते हैं। उनका कार्य आधारित है उस दिव्य आत्मन् के ज्ञान पर, उस परम तत्व पर जो सबका एकमात्र आधार है और जीवन के सभी कार्यों और कारणों का एकमात्र कारण है। वह 'कार्य और कारण' के ज्ञान की तुलना में 'कारण और कार्य' के ज्ञान पर अधिक ज़ोर देते हैं। वैज्ञानिकों के लिऐ 'कार्य और कारण' का ज्ञान ही मूल सिद्धांत है।

आधुनिक विज्ञान की कई शाखाएँ होती हैं, विशेषतः भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जंतुविज्ञान, भूविज्ञान, खगौलविज्ञान, मानवविज्ञान, ब्रह्माण्डविज्ञान आदि। आधुनिक वैज्ञानिकों में कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने जीवन-विज्ञान के संवर्धन के लिए अपने आप को अर्पित कर दिया है जिसमें मनोविज्ञान, जीवभौतिकी, जीवरसायन जैसे संबद्ध विषय भी शामिल हैं। निःसंदेह इन सबका मनुष्य ज्ञान के संग्रहालय में काफ़ी योगदान रहा, परन्तु इसमें से कोई भी मनुष्य के यथार्थ स्वरूप के बारे में पता नहीं लगा पाये और न ही वह मनुष्य के चरित्र और आचरण के मूल को जान पाये।

भौतिक विज्ञान या प्राकृतिक विज्ञान, वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके, अपने में ही उनकी तल्लीनता रखता है और वैज्ञानिक लोग अपने वैज्ञानिक विश्लेषण और अनुसंधान के द्वारा प्राकृतिक क्रिया के अंदर क्रियाशील कुछ सूक्ष्म नियमों और सिद्धांतों के बारे में सचेत होते हैं। ऐसे सारे वैज्ञानिक अनुसंधानों से प्राकृतिक क्रियाओं के अंदर प्रवेश करने के द्वार खुल जाते हैं जिससे जगत और जीवन के विचित्रित स्वभाव की कारण अवस्था का पता चल जाता है। इन्हीं अनुसंधानों पर आधारित होते हैं सभी वैज्ञानिक सिद्धांत। इनमें से कुछ के नाम हैं— विकास सिद्धांत, क्वांटम सिद्धांत, आपेक्षिकता सिद्धांत, परमाणु सिद्धांत, कॉस्मिक किरण सिद्धांत आदि।

वैज्ञानिकों को अपने अवलोकन और अनुसंधान के लिए अपनी बुद्धि से बनाये गये सूक्ष्म शक्तिशाली यंत्रों और उपकरणों पर निर्भरशील

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

रहना पड़ता है। यद्यपि यह यंत्र काफ़ी हद तक सहायता प्रदान करते हैं, इनके रहित वैज्ञानिक कार्य नहीं किया जा सकता है, परन्तु पूर्ण-अनुसंधान के पथ पर यह एक बाधा है। वस्तुनिष्ठ विश्लेषण के लिए यह उपकरण उचित हैं, परन्तु जीवन के व्यक्तिनिष्ठ अनुसंधान के लिए यह सहायक नहीं हैं। इस संदर्भ में कुछ वैज्ञानिकों का यह मानना है कि जहाँ भौतिक विज्ञान समाप्त होता है, वहाँ से तत्वमीमांसा प्रारंभ होती है।

एकत्व का विज्ञान

तात्विक विज्ञान और कुछ नहीं बल्कि 'एकत्व का विज्ञान' का दूसरा नाम है जो ऋषियों और मुनियों का विज्ञान है। इस विज्ञान के संवर्धन से प्राचीनकाल के ऋषियों व मुनियों ने अपनी आंतरिक चेतना व सु-प्रशिक्षित मन द्वारा प्रत्यक्ष रूप से परम दिव्य आत्मन् अर्थात् एक अखंड भूमा के जीवन व जगत् के सत्य व तत्व को न केवल अनुभव किया बल्कि उसके साथ एकात्मता भी प्राप्त की। वर्तमान युग के आत्मज्ञानियों ने भी 'एकत्व का विज्ञान' की सहायता से उसी सत्य की अनुभूति की और अपने यथार्थ स्वरूप की प्राप्ति की जो है असीम दिव्य आत्मन्।

प्राकृतिक विज्ञान का योगदान

प्राकृतिक विज्ञान ने संख्यात्मक ढंग से हमें भौतिक प्रगति प्रदान की है, एवं इसने हमें दो शक्तियों का दान दिया है— शारीरिक और बौद्धिक। परन्तु यह परिपूर्ण नहीं हैं। शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों के सुविकसित होने के उपरांत भी लोगों का जीवन संतोषजनक नहीं है। वह मृत्यु के भय से असुरक्षित महसूस करते हैं। जीवन में पूर्णता की प्राप्ति के लिए, संतुलन और शान्ति के लिए आध्यात्मिक विज्ञान की आवश्यकता है। 'एकत्व का विज्ञान' का यदि उचित ढंग से पालन किया जाये, इसका संवर्धन किया जाये, तो हम मृत्यु के संकट से और पुनर्जन्म के बंधन की दुर्गति से मुक्त हो सकते हैं। इसके उचित संवर्धन से मानवता को अपने यथार्थ स्वरूप की प्राप्ति होगी, जो है 'All Divine for All Time, as It Is' [समस्त ही है परमात्मा (पक्का मैं) सर्वदा के लिए, यथावत् एक समान]। वर्तमान युग में इस दुनिया की दो कठिन समस्याएँ हैं— जीवन में उचित शिक्षा और उचित संरक्षण का अभाव। भौतिक

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

विज्ञान के आधुनिक वैज्ञानिकों ने परमाणु ऊर्जा और परमाणु बम का निर्माण किया है, ऐसा करने से मानवता के लिए कुछ अन्य समस्याएँ खड़ी हो गई हैं जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। वैसे तो यह वैज्ञानिक सांसारिक समस्याओं को सुलझाने में और भय के आतंक को दूर करने में असमर्थ हैं क्योंकि समस्याएँ और आतंक निरंतर बढ़ता रहेगा तब तक, जब तक यह इनका और सबका सर्वनाश न कर दे।

भौतिक विज्ञानी और रसायनज्ञ अपने भौतिक विज्ञान और रसायनशास्त्र के ज्ञान के द्वारा प्रयोगशाला से संबंधित कार्य के लिए ठीक हैं परन्तु वह समाज के व्यवहारिक जीवन और परिवार व उसके गृहस्थ जीवन के क्रिया-कलापों में बहुत अधिक सहायता नहीं कर सकते। मानव समाज के पूर्ण विकास के लिए भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान–– इन दोनों की आवश्यकता है। प्रयोगशाला बनाम परिवार, जो है बुद्धि बनाम हृदय, इसे समान बनाया जा सकता है केवल 'एकत्व का विज्ञान' या 'अध्यात्म-विद्या' के संवर्धन से। मेरा कोई उद्देश्य नहीं, फिर भी मेरा एक मात्र उद्देश्य है– 'उद्देश्यहीन उद्देश्य'; 'एकत्व का विज्ञान', 'अध्यात्म-विद्या' को बिना किसी प्रतिबंध या परिसीमा के भाव से दुनिया के लोगों को परिवेशन करना, सूरज की ज्योतिर्मय क्रिया के समान जो स्वयं असंलग्न रहता है जगत के उन सभी वस्तुओं से जिसे वह प्रकाशित करता है। मुझे पता है कैसे इस दुनिया के लोग अज्ञानता के कारण कष्ट उठा रहे हैं। घृणा, ईर्ष्या, उग्रता, मिथ्याचार, भ्रष्टाचार, स्वजन पक्षपात, चालबाज़ी और भ्रांति बढ़ते हैं, अज्ञानता के द्वैतभाव के उत्पन्न होने से, जो इन्द्रिय सुख खोजते हैं। आत्म नियंत्रण के अभाव से यह सब जीवन में होता है। 'अध्यात्म-विद्या' (एकत्व का विज्ञान) के संवर्धन से मनुष्य आसानी से अज्ञानता के द्वैतभाव की भ्रांति के प्रतिक्रियात्मक परिणामों से बच सकता है और पूर्ण रूप से अपने यथार्थ स्वरूप में प्रतिष्ठित हो सकता है।

एकत्व का विज्ञान का योगदान

'एकत्व का विज्ञान' हमें आत्मज्ञान की अनुभूति प्रदान करता है।

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

यह केवल उन साधुओं और संतों के लिए ही नहीं है जो गुफाओं में रहते हैं बल्कि, बिना किसी वर्जन के, यह सबके लिए है। यह सबका जन्मसिद्ध अधिकार है। आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ इसकी भी कामना करनी चाहिए, संवर्धन करना चाहिए और विकास करना चाहिए। 'एकत्व का विज्ञान' के संवर्धन के लिए एक वैज्ञानिक बुद्धि आवश्यक है, जिससे कि जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। यदि मनुष्य के हृदय में 'एकत्व का विज्ञान' थोड़ा सा भी अभिव्यक्त हो तो वह क्रोध, भय, कामना के ऊपर विजय प्राप्त कर लेगा, गुण और मात्रा की परिपूर्णता के साथ उसे अंदरूनी आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान की प्राप्ति होगी और वह शान्ति में पूर्ण रूप से सु-प्रतिष्ठित होगा। इस विज्ञान की परिपूर्ण अभिव्यक्ति से मानव स्वभाव पूरी तरह दिव्य स्वभाव में बदल जायेगा; और यथार्थ स्वरूप की पूर्णता, मुक्ति और अनुभूति स्वतःस्फूर्त हो जायेगी। दिव्य आत्मन् का जीवन में चिर-प्रकाश होगा। आत्मज्ञानी को यह ज्ञान है कि परमाणु शक्ति बाहरी स्वभाव है और आत्मिक शक्ति अंदरूनी स्वभाव है, जो पूर्ण चैतन्य शक्ति है जिसे 'चित्-तत्व', 'बोध-तत्व', 'आत्म-तत्व' कहते हैं।

आत्मज्ञानी व स्वानुभूति

दिव्य आत्मन् की अनुभूति से सम्पन्न पुरुषों को ऋषि, मुनि, 'आध्यात्मिक वैज्ञानिक' कहा जाता है। वह अपने आत्मन् के साथ समस्त ब्रह्माण्ड की एकात्मता को अनुभव करते हैं। समष्टि एक व तुरीय एक के साथ भी अपनी अनुभूति की एकता एवं स्वरूप की एकात्मता को अनुभव करते हुए वे सबको अपना ही आत्मन् मानकर ग्रहण करते हैं। इस तरह की स्वानुभूति के लिए मनुष्य को पूर्ण प्रशिक्षण, अनुशासित जीवन और एक शुद्ध मन की आवश्यकता है और उसी के साथ-साथ एक पूर्ण गुरु का आध्यात्मिक सहारा और पथ प्रदर्शन भी अनिवार्य है। ज्ञान बढ़ता है शिक्षा से। उचित शिक्षा से अंदरूनी ज्ञान, शक्ति और सत्य प्रकाशित होता है। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सिद्धांतों के ज्ञान के लिए हमें उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उचित प्रशिक्षण के रहित हम इसे भली-भाँति समझ

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

नहीं पायेंगे, साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या करनी। उच्च कोटि के शिक्षित लोग इस विषय का अनुकरण कर सकते हैं परन्तु इसकी मौलिकता का दावा नहीं कर सकते हैं। एक यथार्थ वैज्ञानिक अपने अनुभवसिद्ध सिद्धांतों की मौलिकता के दायित्व को लेता है ठीक उसी तरह, जिस तरह यथार्थ ऋषि या मुनि (आध्यात्मिक वैज्ञानिक) दायित्व लेते हैं अपने ज्ञान की मौलिकता का या परम तत्व की प्रत्यक्ष अनुभूति का 'All Divine for All Time, as It Is' [समस्त ही है परमात्मा (पक्का मैं) सर्वदा के लिए, यथावत् एक समान] के रूप में।

यथार्थ स्वरूप— दिव्य स्वरूप

मनुष्य की गहनता, मनुष्य का आध्यात्मिक स्वभाव जिसे अध्यात्म-विद्या कहते हैं, यह पूर्ण संतुलित है; स्वभावतः यह चिरंतन एक है जो प्रेम, सहानुभूति, सद्भावना, अनुकंपा, आनंद और शान्ति से भरपूर है।

हमें अपने जीवन में पूर्णता, मुक्ति और ईश्वरत्व की प्राप्ति के लिए अपने दिव्य स्वभाव का संवर्धन हर हालत में करना चाहिए। उस संवर्धन के लिए हमारी वर्तमान शैक्षिक पद्धति प्रभावशाली नहीं है। इसको पूरी तरह बदलकर मनुष्य-निर्माण शिक्षा से प्रतिस्थापित करना चाहिए। ऐसी शैक्षिक व्यवस्था हमें अवसर देगी कि हम हर तरह के वैज्ञानिक और तकनीकी प्रशिक्षण के साथ-साथ जीवन में 'एकत्व का विज्ञान' का पूरा पाठ्यक्रम लागू कर सकें दिव्य आत्मन्, अखंड भूमा एक के यथार्थ प्रेम में तथा यथार्थ प्रेम के द्वारा। ऐसा करने के लिए चार अनिवार्यताएँ हैं:

– अंदरूनी और बाहरी इंन्द्रियों का नियंत्रण
– एकाग्रता और ध्यान का अभ्यास
– आध्यात्मिक विभेदीकरण और भक्ति
– आत्म-विश्लेषण और आत्म-जिज्ञासा

व्यक्तिनिष्ठ व वस्तुनिष्ठ अनुभूतियों का संतुलन व एकता

आध्यात्मिक विज्ञान के उचित संवर्धन से विकसित होती है अंदरूनी

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान जिसका संभरण स्वतःस्फूर्त होता रहता है एवं जिससे प्राकृतिक विज्ञान की अपर्याप्तता और अपूर्णता दूर हो जाती है। यह मनुष्य के चरित्र और आचरण निर्माण के लिए और मानवीय गुणों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

ऐसी उन्नति के लिए अंतराध्यात्मिक विज्ञान का अनुशीलन करना होगा। जिसके लिए दोनों गुणात्मक व परिमाणात्मक संपन्नता एवं इसके साथ अंदरूनी व्यक्तिनिष्ठ और बाहरी वस्तुनिष्ठ अनुभूतियों की एकता का पूरी संतुलित स्फूर्ति के साथ पालन करना होगा। इस संदर्भ में मनुष्य को यह जानना चाहिए कि हमारा अंदरूनी स्वभाव निश्चयात्मक होता है, जबकि बाहरी स्वभाव नकारात्मक होता है। किसी एक का अनुशीलन करने से कोई प्रगति संभव नहीं है। आध्यात्मिक विभेदीकरण, आत्म-विश्लेषण और अंतरदर्शन से मनुष्य बाहरी स्वभाव को नकार कर अंदरूनी स्वभाव के परे जाकर अपने यथार्थ स्वरूप, दिव्य स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

विभिन्न ऊर्जा स्तरों का सत्य

दिव्य स्वरूप के संवर्धन के लिए हमें आध्यात्मिक विज्ञान का अनुशीलन करना होगा जो विभिन्न ऊर्जा स्तरों के सत्य को प्रकाशित करता है। उनका अनुक्रमण है (बाहर से भीतर) (a) बाहरी स्थूल जड़ स्वभाव की प्राकृतिक ऊर्जा; इसके पीछे (b) तंत्रिका तंत्र या ऊर्जा; (c) आध्यात्मिक तंत्र या ऊर्जा (मानसिक स्तर); (d) बौद्धिक सम्पन्न ऊर्जा स्तर जो चरित्र के स्वभाव को निर्धारित और विवेचित करता है। मन और बुद्धि का चैतन्य प्रतिबिंबित है, असल नहीं। इससे भीतरी जड़ स्वभाव बनता है और यह अहंकार के रूप में जीवन पर राज करता है। यह चार स्तरीय क्रीड़ा करता है, वह हैं— 'मन', 'बुद्धि', 'अहंकार' और 'चित्त'। इन चारों के कार्य अलग-अलग हैं, परन्तु इनका मूल एक है। इनके विशेष गुणों की परिभाषा इस प्रकार दी गई है: (i) मन– जब वह किसी भी पदार्थ का पक्ष और विपक्ष का विचार करता है; (ii) बुद्धि–– जब वह किसी भी पदार्थ का स्वभाव निश्चित करता है;

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

(iii) अहंकार– जब वह भौतिक शरीर से सारूप्य के कारण अपने आप को आत्मन् समझता है; (iv) चित्त– अर्थात् सारी स्मृतियों का भंडार जो पूर्व अनुभूत वस्तुओं का आनंद और अनुभव लेना चाहता है (पूर्ववासना या स्मृति का क्षेत्र)। इन चार स्तरीय भीतरी स्वभाव के पीछे आधार रूप में है साक्षी चैतन्य, जो वस्तुतः दिव्य आत्मन् है। वह एकमात्र ऊर्जा स्रोत है जहाँ से अभिव्यक्त होती है बुद्धि की शक्ति; मन की, इंन्द्रियों की, बाहरी स्वभाव की गतिविधि। यह सभी संपोषित होते हैं दिव्य आत्मन् के प्रकाश से, जो साक्षी चैतन्य है।

साक्षी चैतन्य की स्वानुभूति

साक्षी चैतन्य को जानने और अनुभव करने का उपाय यह है कि अपने अंगों को प्रशिक्षित किया जाये–– सबसे पहले आध्यात्मिक अनुशासन का अनुशीलन करके बाहरी और भीतरी अंगों को प्रशिक्षित करना; और दूसरा, अपने अंतर् इन्द्रियों को नियंत्रित करना; तीसरा, आत्म-विश्लेषण और आत्म-जिज्ञासा के द्वारा अपने अतंस्थ में ध्यान करना; चौथा, पूर्ण आत्म-समर्पण या आधारभूत चैतन्य के साथ पूरी तरह एकीभूत होना। इस प्रकार से अखंड स्वरूप की प्राप्ति होती है।

समस्त आयामों और मध्यवर्ती पड़ावों का अतंर्वेधन करने के बाद मनुष्य आत्मज्ञान की उपलब्धि कर सकता है। आत्मज्ञान समस्त चीज़ों का मूल तत्व, आधार, पृष्ठभूमि है। यही विशुद्ध आत्मन् है।

प्रत्येक का एक आत्मन् है। सभी का आत्मन् तात्विक रूप से एक है। अहंकार-युक्त व्यक्तित्व है भीतरी स्वभाव का रूपांतरण, जो आत्म-चैतन्य के प्रतिबिंबित प्रकाश द्वारा विकसित होता है। अंतर् इन्द्रियों में और उनके द्वारा आत्म-चैतन्य प्रतिबिम्बित और अभिव्यक्त होता है बुद्धि, मन, अहंकार और चित्त के रूप में। यह इंद्रिय सुख के लिए, इंद्रियों के विषय के रूप में, बाहरी स्वभाव के इंद्रिय-अंगों पर प्रतिबिंबित होते हैं।

जीव, जो अहंकार-युक्त व्यक्तित्व वाला है, अपने इंद्रियों के अंगों में और उनके द्वारा सभी इंद्रिय विषयों का सुख भोग करता है, सो वह हुआ इंद्रिय-विषयों का भोगी। जिसे हम इंद्रिय-विषय कहते हैं वह असल रूप में आत्मन् से भिन्न नहीं है, यद्यपि भ्रमित मन को ऐसा प्रतीत होता है।

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

वस्तुनिष्ठ स्वभाव प्रतीत होता है पँचस्तरीय, यद्यपि वह मूल रूप से आत्मन् के साथ एकीभूत है, परन्तु जीव या अहंकार-युक्त व्यक्तित्व अपने अनुभूति के पाँच अंगों में और के द्वारा ऐसा अनुभव करता है। चक्षु अंग में और के द्वारा अहंकार को केवल बाहरी रूप का अनुभव होता है, ध्वनि या अन्य अनुभवों का नहीं। कानों में और के द्वारा केवल बाहरी ध्वनि का अनुभव होता है, रूप या अन्य अनुभवों का नहीं। इस प्रकार से अनुभूतियों के इन पाँच अंगों में और के द्वारा अहंकार पँचस्तरीय विषयों का अनुभव करता है– शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध। यह सूक्ष्म तत्व की पाँच विशेषताएँ हैं। आध्यात्मिक विज्ञान में इन्हें रूप, नाम, भाव, बोध कहा जाता है। इन सबको पुनः चार आयामों में बाँटा जाता है–– स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम। इसके अतिरिक्त कोई भी विभेदीकरण या विश्लेषण संभव नहीं है। वहाँ विषय/वस्तु के भाव एकीभूत हो जाते हैं। वहाँ केवल आधारभूत चैतन्य, दिव्य आत्मन् विराजमान है।

आत्मज्ञान स्वभावतः सभी अनुभूतियों को एक कर देता है, अर्थात् वह निरंतर प्रकाशित होता है, क्रियात्मक होता है और पुनः अंदर विलुप्त हो जाता है। हम अपने इंद्रियों में और के द्वारा इस वस्तुनिष्ठ जगत का अनुभव करते हैं; मन में और के द्वारा इस भाव जगत का; एकाग्र बुद्धि में और के द्वारा हम अपने यथार्थ स्वरूप, साक्षी चैतन्य का अनुभव करते हैं। उसके परे है अखंड भूमा।

जैसे कि पहले उल्लेख किया गया है कि 'विश्व-नाटक' आवश्यक है, क्योंकि वह आत्म-चैतन्य की क्रीड़ा है जो मन और बुद्धि में और के द्वारा प्रकट होता है एवं निरंतर अवस्थाओं के बदलाव में अनुभूत होता है। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति यह तीन हैं आविर्भाव की अवस्थाएँ, फिर थोड़े समय के लिए गतिशील अवस्था है, अंत में है विलुप्ति– इन सब का अनुभव वही एक आत्मन् करता है। इन सभी अवस्थाओं का आत्मन् ही एकमात्र साक्षी है। अतंर्तम आत्मन् की द्रष्टानुभूति वर्णन करती है 'Sportful Dramatic Sameside Game of Self-Consciousness' (निज चैतन्य का नाटकीय एकतरफ़ा क्रीड़ाभिनय) जो स्वभावतः इंद्रिय, मन और बुद्धि के परे है। तीनों अवस्थाओं के परे है तुरीय एक, जो

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

हमारा आत्म-चैतन्य या साक्षी चैतन्य है। इस तुरीय स्वरूप में सभी स्वभाव एकीभूत हो जाते हैं, जो रह जाता है वह है केवल विशुद्ध ज्ञान या चैतन्य और आनंद भूमा। वहाँ हम हैं 'One in the One, One of the One, One from the One, One for the One, One by the One, One with the One, One to the One, One on and beyond the One.' (एक में एक, एक का एक, एक से एक, एक के लिए एक, एक के द्वारा एक, एक के साथ एक, एक के प्रति एक, एक पर एक, एवं परात्परम एक)। यह है 'एक का फ़ार्मूला'; यह चैतन्य, आनंद, प्रेम और सत्-चित्-आनंद तत्व की शान्ति का फ़ार्मूला भी है। चैतन्य का फ़ार्मूला है— 'Consciousness in Consciousness, of Consciousness, from Consciousness, for Consciousness, by Consciousness, with Consciousness, to Consciousness, and on and beyond Consciousness' (चैतन्य में चैतन्य, का चैतन्य, से चैतन्य, के लिए चैतन्य, के द्वारा चैतन्य, के साथ चैतन्य, के प्रति चैतन्य, पर चैतन्य, एवं परात्परम चैतन्य)। इसी प्रकार आनंद, प्रेम, शान्ति और सत्-चित्-आनंद भूमा का फ़ार्मूला है। एक आत्मज्ञानी को न तो वस्तुनिष्ठ सुख के प्रति और न ही सुख की वस्तुओं के प्रति कोई आकर्षण होता है। आत्मज्ञान की प्राप्ति से पहले मनुष्य को आत्म संयम, नैतिक अनुशासन जैसे प्रमुख सद्गुणों* का पूर्ण विकास करना पड़ेगा— ऐसा करने से वह द्वैत भावना से उत्पन्न भ्रमों के परे चला जायेगा।

द्वि-स्तरीय विद्या का तुलनात्मक अध्ययन— परा व अपरा

दो प्रकार की विद्याएँ होती हैं— (1) 'अध्यात्म-विद्या' और (2) 'भूत-विद्या' जिसे प्रकृति विद्या भी कहा जाता है; अर्थात् परा-विद्या और अपरा-विद्या। 'अध्यात्म-विद्या' है 'एकत्व का विज्ञान' जिसका पालन सत्य, पूर्णता और मुक्ति के जिज्ञासु करते हैं। इसकी अनुभूति करने वाले को ऋषि, मुनि या 'आध्यात्मिक वैज्ञानिक' कहा जाता है। 'भूत-विद्या' है भौतिक या प्राकृतिक विज्ञान जिसका अनुकरण वैज्ञानिकों द्वारा किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञान के संवर्धन से बौद्धिक संपन्नता प्राप्त होती

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

है, परन्तु जीवन में पूर्णता और मुक्ति प्राप्त नहीं होती। इसके विपरीत, आध्यात्मिक विज्ञान के संवर्धन से हमें यथार्थ स्वरूप, आध्यात्मिक पूर्णता और मुक्ति की प्राप्ति होती है। हम सहज भाव से बाहरी स्वभाव के नानात्व, बहुत्व और भीतरी स्वभाव की द्वैत भावना और आपेक्षिकता के परे जा सकते हैं।

हम आपेक्षिकता के बारे में सुनते हैं परन्तु हम में से कुछ गिने चुने लोग ही उसकी असल जानकारी रखते हैं। साधारणतः यह भीतरी और बाहरी स्वभाव के बारीक और सूक्ष्मतर गुणों के साथ कार्य करता है, परन्तु यथार्थ स्वरूप के साथ नहीं। इसे आपेक्षिकता कहा जाता है। क्योंकि यह तत्वस्वरूप नहीं है, इसका व्यवहार द्वैत तत्व से होता है, तत्वस्वरूप से नहीं। सभी सूक्ष्म सिद्धांत और नियम जो आपेक्षिकता के सत्य से सम्बंधित हैं वह गुणों के प्रतिबंध से मुक्त या स्वतंत्र नहीं हैं। किसी मनुष्य, वस्तु, क्रिया और परिणाम के ज्ञान से नहीं बल्कि 'ज्ञान का ज्ञान', 'सचेतनता की सचेतनता' जैसे सद्गुणों के द्वारा, यह 'एकत्व का विज्ञान' पर पहुँच कर, तत्वस्वरूप में बदल जाता है। जब तक हम मनुष्य, वस्तु, क्रिया और परिणाम के ज्ञान से जुड़े रहते हैं तब तक हम आपेक्षिकता के नियमों में बंधे रहते हैं अर्थात् हम रूपांतरण और परिवर्तन के अधीन हैं, जबकि तत्वस्वरूप सभी रूपांतरण और परिवर्तन से चिर-मुक्त है। यह बाहरी, भीतरी और केन्द्रीय स्वभाव (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) के नियमों के परे है। कारण है बीज अवस्था या प्रसुप्त अवस्था— बाहरी और भीतरी स्वभाव का, सूक्ष्म और स्थूल स्वभाव का, भौतिक और मानसिक स्वभाव का। केन्द्रीय स्थिति की कारण अवस्था में पदार्थ और भाव की दुनिया प्रकट होती है और विलुप्त हो जाती है (अव्यक्त प्रकृति–– अविभेदित और अव्यक्त अवस्था)। अपनी आध्यात्मिक संपूर्णता की पूर्ण पराकाष्ठा के लिए वर्तमान युग में मानवीय स्वभाव

---

* प्रमुख सद्गुण हैं छःस्तरीय। केवल दो का उल्लेख किया गया है। शेष चार हैं— न्याय, बुद्धिमानी, संतुलन व सहनशक्ति।

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

(संस्कृति और सभ्यता) की आवश्यकता माँग करती है– वैज्ञानिक संवर्धन व ज्ञान के साथ आध्यात्मिक संवर्धन व ज्ञान की एकता और सारूप्य। असीम एकत्व, अंदर और बाहर, सबका आधारभूत मूल है, जो जीवन व्यापी सत्य और तत्वस्वरूप या दिव्यता है, जीवन में जिसकी अभिव्यक्ति एवं अनुभूति करनी है तथा जिसके लिए हम युगों-युगों से प्रयास कर रहे हैं। जीवन में आत्मज्ञान ही हमारा एकमात्र कर्त्तव्य होना चाहिए। जिस प्रकार समस्त नदियों का आदि व अंत है अनंत सागर, उसी प्रकार सत्ता और शक्ति के समस्त जगत का आदि व अंत है– असीम दिव्य आत्मन् जो है सत्-चित्-आनंद तत्व का सागर।

आध्यात्मिक पूर्णता के लिए एक यथार्थ गुरु की आवश्यकता

इस ज्ञान की एकता और सारूप्य की प्राप्ति के लिए, एक ऐसे पूर्ण आत्मज्ञानी का प्रयोजन है जो कम से कम आध्यात्मिक विज्ञान के ज्ञान से वैज्ञानिक मन को प्रशिक्षित कर सकते हैं, अर्थात् 'भूत-विद्या' का 'आध्यात्मिक विद्या' में रूपांतरण (भौतिक विज्ञान से आध्यात्मिक विज्ञान)।

एक सच्चे आध्यात्मिक वैज्ञानिक, एक सच्चे जिज्ञासु के संपूर्ण स्वभाव को प्रेरित करते हैं, अपने आध्यात्मिक पूर्णता के आत्म-दीप्त प्रकाश से आध्यात्मिक और दिव्य बनाते हैं। हम सभी में आध्यात्मिक पूर्णता विराजमान है परन्तु हम उसे भूल गये हैं। हमारे द्वारा उत्पादित निम्न स्वभाव ने हमें ही मोह लिया है। हमें अपने आप को इस मोह से छुड़ाना होगा। एक पूर्ण गुरु इस विषय में अपने 'एकत्व का विज्ञान' की अनुभूति के स्वयं प्रस्फुटित प्रकाश से हमें पूरी तरह सचेतन कराते हैं। धन्यवाद।

ओम राम जय राम।

ओम शांति ओम शांति ओम शांति

[समय अभाव के कारण दिव्य गुरु को अपना प्रवचन बीच में ही रोकना पड़ा, उन्होंने श्रोतागणों को धन्यवाद दिया। समारोह के कार्यकर्ता Sri Ravi Shankar और S. R. Rajderkar of the A.M.D. Deptt. of Atomic Energy ने गुरु श्रीश्रीबाबाठाकुर को अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और साथ ही साथ उन विख्यात और प्रतिष्ठित लोगों के समूह को

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org

भी धन्यवाद दिया। उनमें से कुछ स्थानीय रेडियो कलाकार, जैसे— Ms. Ratna Nandi, Mrs. Nilima Tarafder & Mrs. Reena Dey, Music Teacher of the Central School, Upper Shillong— इन्होंने मधुर भक्ति संगीत गाकर दिव्य गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की।

प्रवचन को सबने बहुत सराहा। सभी गुरु के इस अपरंपरागत, अत्यंत प्रबुद्ध करने वाले प्रवचन को सुनकर मंत्रमुग्ध हो गये।]

© Saccidananda Society, Kolkata. Website: SaccidanandaSociety.org